कक्षा = 11 वी 12 वीं
विषय = हिन्दी व्याकरण
अध्याय = 2 कहानी का उद्भव एवं विकास

2019-20

कहानी हिन्दी की लोकप्रिय विधा है। हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास में भारत के प्राचीन कथा साहित्य, पाश्चात्य कथा साहित्य एवं लोक कथा साहित्य का सम्मिलित प्रभाव देखा जा सकता है। संस्कृत तथा अन्य प्राचीन साहित्य में रची गई गद्य कृतियों में भी हिन्दी कहानी के बीज निहित हैं। 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशित होने के पूर्व गजाधर सिंह ने बाण रचित 'कादम्बरी' को एक बड़ी कहानी के रूप में अनूदित किया था। आधुनिक युग में कहानियों का आरंभिक रूप इन अनूदित रचनाओं में स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ। यह अवश्य है कि जिसे आधुनिक अर्थ में कहानी कहते हैं, उसका वस्तु और शिल्प प्राचीन कथाओं से सर्वथा भिन्न है।

कहानी का स्वरूप एवं तत्व :-

कहानी में मानव-जीवन की किसी एक घटना अथवा व्यक्तित्व के किसी एक पक्ष का मनोरम चित्रण रहता है। उसका उद्देश्य केवल एक ही एकान्वित प्रभाव को उत्पन्न करना होता है, जबकि उपन्यास का क्षेत्र कहीं अधिक व्यापक होता है। उसमें विविध प्रकार के चरित्र अपनी छटा दिखाते हैं, जबकि कहानी में एक ही चरित्र के किसी विशेष पक्ष का उद्घाटन होता है। उपन्यास और कहानी का अंतर समझने के लिए प्रेमचंद का निम्नलिखित वक्तव्य सबसे अधिक उपयुक्त है-"कहानी ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सभी उसी एक भाव को पूर्ण करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का सम्पूर्ण बृहद-रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता, न उसमें उपन्यास की भाँति सभी रसों का सम्मिश्रण होता है। वह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं जिसमें भाँति-भाँति के फूल बेल-बूटे सजे हुए हैं बल्कि वह एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

कहानी की परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से दी है, जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं-

"कहानी घटनाओं का वह सुसम्बद्ध क्रम है, जो पाठक को किसी परिणाम तक पहुँचा सके।" - फास्टर

"जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा-सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की स्वाभाविक गति का प्रदर्शन कहानी में होता है।" - इलाचंद्र जोशी

"कहानी तो एक भूख है जो निरन्तर समाधान पाने की कोशिश करती है।" - जैनेन्द्र कुमार

"कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है।" - अज्ञेय

कहानी के तत्व-

कहानी में रोचकता, प्रवाह और सुसम्बद्धता बनाये रखने के लिए कहानी के तत्वों की महत्ता है।

यद्यपि कहानी का विकास विविध रूपों में हुआ है और होता जा रहा है फिर भी कुछ तत्व ऐसे हैं जो न्यूनाधिक सभी प्रकार की कहानियों में पाए जाते हैं। ये तत्व निम्नलिखित हैं-

1. कथानक
2. पात्र या चरित्र चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. देशकाल या वातावरण
5. उद्देश्य
6. भाषा-शैली

8:56 AM

Notepad F... REVERT SAVE

Enter title...

कक्षा-११वी १२वी
विषय- हिन्दी व्याकरण
अध्याय -2 कहानी का उद्भव और विकास
प्रश्न 1कहानी की परिभाषा लिखिए
प्रश्न 2जैनेन्द् कुमार के अनुसार कहानी की परिभाषा क्या है?
प्रश्न 3 कहानी के कितने तत्व होते हैं?
प्रश्न 4 सरस्वती पत्रिका के प्रकाशित होने के पूर्व गजाधर सिहं ने बाण रचित किस रचना को कहानी के लिए अनूदित किया था?

1. कथानक:-घटनाओं के जटिल जाल को कथानक कहते हैं। कथावस्तु या कथानक कहानी का मुख्य ढाँचा होता है। इस बीज को जीवन से ग्रहणकर लेखक अपनी सजग कल्पना के सहारे उसके व्यक्त रूप को रोचकता से मंडित करता है। साधारणतः पाठक का मन इसी के कारण कहानी में बँध जाता है। कहानी का कथानक जीवन के एक अंग, एक अंश, एक घटना, एक मनोदशा, एक विचार, एक प्रसंग, एक विशिष्ट वातावरण से संबद्ध होना चाहिये तथा गौण या अवान्तर का संयोग नहीं होना चाहिए।

2. पात्र या चरित्र चित्रण:-कथा का विकास पात्रों के द्वारा ही होता है। चरित्र चित्रण के लिए कई प्रणालियाँ अपनाई जाती हैं। सबसे सामान्य प्रणाली है- लेखक द्वारा पात्र का प्रत्यक्ष वर्णन। इससे अच्छी प्रणाली है कि लेखक अपनी ओर से पात्र की अच्छाई-बुराई न बताते हुए क्रिया कलाप के द्वारा उसका चित्रांकन करे। कभी-कभी कथोपकथन के द्वारा भी पात्रों के व्यक्तित्व का उद्घाटन किया जाता है। पात्रों के व्यक्तित्व की संक्षिप्त, स्पष्ट और संकेतात्मक अभिव्यक्ति कहानी का उल्लेखनीय गुण है। श्रेष्ठ कहानी लेखक न तो पात्रों पर अपने व्यक्तित्व का आरोप करता है, और न चरित्रों को आकस्मिक घटनाओं पर निर्भर ही रखता है, क्योंकि इनके आश्रय से चरित्रांकन में अस्वाभाविकता, एकरसता आदि दोष आ जाते हैं।

3. कथोपकथन या संवाद:-संवाद से कथानक को गति मिलती है। इससे पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ प्रकट होती हैं। संवाद छोटे, पात्रों के अनुरूप, भंगिमायुक्त एवं मार्मिक होने चाहिए। कहानी के सौन्दर्य वृद्धि में संवाद का निश्चित योग रहता है, संवादरहित कहानियों में उपयुक्त प्रभाव उत्पन्न नहीं हो पाता। संवादों में सहजता, रोचकता, स्वाभाविकता और सजीवता होना चाहिए। संवाद पात्र, वातावरण, स्थान और समय के अनुकूल होना चाहिए। संवादों में पात्र के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व तथा अन्य मनोभावों को प्रकट करने की शक्ति होना चाहिए एवं उसमें संक्षिप्तता होना चाहिए।

4. देशकाल एवं वातावरण : -कहानी में प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक आदि कई प्रकार के वातावरण का चित्रण हो सकता है। कहानी का कथानक और उसके पात्र किसी न किसी देश और काल से सम्बन्धित रहते हैं। प्रभाव वृद्धि के लिए कहानी में वातावरण की भी आवश्यकता होती है। सफल कहानी लेखक के लिए इसकी जानकारी आवश्यक है।

वातावरण के उपयुक्त चित्रण से कथात्मक रचनाओं में रस-निष्पत्ति और मनोवैज्ञानिक प्रभाव की सृष्टि में विशेष सुविधा रहती है। कहानीकार घटनाओं, प्रकृति सौन्दर्य एवं पात्रों से सम्बद्ध स्थानों आदि का काल के अनुसार चित्रण करते हैं। इस विषय में किसी भी प्रकार का व्यतिक्रम कहानी की सजीवता, स्पष्टता और प्रभाव-सृष्टि के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

5. उद्देश्य :- किसी घटना को प्रस्तुत करना, कोई विशेष भाव या विचार उद्बुद्ध करना, किसी समस्या की ओर संकेत करना या किसी पात्र की विशेषताओं का आकलन करना आदि ऐसी अनेक समस्याओं का चित्रण करना, कहानी का उद्देश्य होता है। आज की कहानी मात्र मनोरंजन के लिए नहीं लिखी जाती वरन् उसमें एक जीवन संदेश भी होता है। कहानी में जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की सहज व्याख्या सोद्देश्य प्रस्तुत की जाती है, प्रगतिवादी, सुधारवादी आदि विभिन्न प्रकार की कहानियाँ लेखक के उद्देश्य की विभिन्नता का ही परिणाम होती हैं। कहानी की घटनाएँ, आदर्श और यथार्थ में से किसी भी चिंतन धारा की ओर उन्मुख हो सकती हैं, किन्तु यह आवश्यक है कि कहानी में प्रस्तुत जीवन दर्शन स्वस्थ हो। श्रेष्ठ कहानी में उद्देश्य को उपदेश के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता, मात्र संकेत भर दिया जाता है।

2019-20